यजुर्वेद

अध्याय ३६

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Yajurveda

Chapter 36

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

साराँश

छत्तीसवे अध्याय में ऋषि हमें वेदों के ज्ञान को आत्मसात कर उसके प्रयोग द्वारा अपने व्यवहार से कमियाँ दूर करने और अपने आत्मबल को बढ़ाने का उपदेश देते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें ईश्वर के गुणों पर विचार कर, उन्हें नमन कर, उनसे हमारी बुद्धियों को उत्तम ज्ञान मार्ग की ओर प्रेरित करने की प्रार्थना भी करते हैं। ऋषि सबके लिए मंगल, आनन्द, शान्ति, सौहार्द, अभयदान, स्वास्थ्य और दीर्घायु की भी प्रार्थना करते हैं।

अथ षट्त्रिंशाऽध्यायारम्भः

प्रथम मन्त्र में ऋषि हमें वेदों की शरण में जा अपने आत्मबल को बढ़ाने का उपदेश देते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। अग्निर्देवता। ४० अक्षराणि। आर्षी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये।
वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥१॥ यजुः ३६:१

ऋचम्। वाचम्। प्र। पद्ये। मनः। यजुः। प्र। पद्ये। साम। प्राणम्। प्र। पद्ये। चक्षुः। श्रोत्रम्। प्र। पद्ये॥
वाक्। ओजः। सह। ओजः। मयि। प्राणापानौ ॥१॥

(*वाचम्*) **वाणी से मैं** (*ऋचम्*) **ऋग्वेद की** (*प्र*)(*पद्ये*) **शरण लेता हूँ, ऋचाएं** (*मयि*) **मेरी** (*वाक्*) **वाणी को** (*ओजः*) **ओज और बल प्रदान करें।** (*मनः*) **मन से मैं** (*यजुः*) **यजुर्वेद की** (*प्र*)(*पद्ये*) **शरण लेता हूँ, यज्ञ हमें** (*सह*) **सामाजिक सहयोग और** (*ओजः*) **बल प्रदान करें।** (*प्राणम्*) **प्राण से मैं** (*साम*) **सामवेद की** (*प्र*)(*पद्ये*) **शरण लेता हूँ,** (*प्राणः*) **प्राण वायु मुझमें शक्ति का सञ्चार करती रहे।** (*श्रोत्रम्*) **कानों से मैं** (*चक्षुः*) **विज्ञान (अथर्ववेद) की** (*प्र*)(*पद्ये*) **शरण लेता हूँ,** (*अपानः*) **अपान वायु मेरे दोषों को दूर करती रहे।**

दूसरे मन्त्र में ऋषि हमारी कमियों को दूर करने के प्रार्थना करते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। ३९ अक्षराणि। निचृदार्षी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वाऽतितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥२॥ यजुः ३६:२

यत्। मे। छिद्रम्। चक्षुषः। हृदयस्य। मनसः। वा। अतितृण्णमित्यतितृण्णम्। बृहस्पतिः। मे। तत्। दधातु॥
शम्। नः। भवतु। भुवनस्य। यः। पतिः ॥२॥

Yajurveda chapter 36

Synopsis

In the thirty-sixth chapter, the sages advise us to imbibe the Vedic wisdom, emulate it in our conduct, remove our flaws and increase our mental strength. The sages discuss some basic qualities of God and after offering obeisance to the Almighty, they offer prayers for guiding our intellects on to the righteous path. The sages also offer prayers and advice for everyone's prosperity, bliss, peace, harmony, fearlessness, health and longevity.

In the first mantra the sage advises us to seek the Vedic wisdom and build our inner strength.

ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** agniḥ, **vowels** 40, **chhandaḥ** aarṣhee paṅktiḥ, **svaraḥ** pañchamaḥ.

1. **ṛicham vaacham pra padye mano yajuḥ pra padye**
   saama praaṇam pra padye chakṣhuḥ shrotram pra padye,
   vaagojaḥ sahaujo mayi praaṇaapaanau. Yajuḥ 36:1

ṛicham vaacham pra padye manaḥ yajuḥ pra padye saama praaṇam pra padye chakṣhuḥ shrotram pra padye, vaak ojaḥ saha ojaḥ mayi praaṇa-apaanau.

With my (*vaacham*) **organ of speech I** (*pra*)(*padye*) **seek refuge of the** (*ṛicham*) **Ṛigveda, may the Vedic hymns grant** (*mayi*) **my** (*vaak*) **speech** (*ojaḥ*) **strength and charisma! With my** (*manaḥ*) **mind I** (*pra*)(*padye*) **seek refuge of the** (*yajuḥ*) **Yajurveda, may the yajña** (*ojaḥ*) **strengthen** (*saha*) **the cooperation in our society! With my** (*praaṇam*) **breath I** (*pra*) (*padye*) **seek refuge of the** (*saama*) **Saamaveda, may the rhythm of my** (*praaṇaḥ*) **breath keep me energetic! With my** (*shrotram*) **ears I** (*pra*)(*padye*) **seek refuge of** (*chakṣhuḥ*) **the scientific knowledge contained in the Atharvaveda, may** (*apaanaḥ*) **the detoxifying airs keep on removing my ailments!**

In the second mantra the sage offers prayers for removal of our deficiencies.

ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** bṛihaspatiḥ, **vowels** 39, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee paṅktiḥ, **svaraḥ** pañchamaḥ.

2. **yanme chhidrañ chakṣhuṣho hṛidayasya manaso vaa'titṛiṇṇam bṛihaspatirme taddadhaatu,**
   shan no bhavatu bhuvanasya yaspatiḥ. Yajuḥ 36:2

yat me chhidram chakṣhuṣhaḥ hṛidayasya manasaḥ vaa atitṛiṇṇam bṛihaspatiḥ me tat dadhaatu, sham naḥ bhavatu bhuvanasya yaḥ patiḥ.

(*मे*) **मेरे** (*चक्षुषः*) **दृष्टिकोण व** (*हृदयस्य*) **भावनाओं में** (*यत्*) **जो** (*छिद्रम्*) **त्रुटियाँ हैं** (*वा*) **और** (*मे*) **मेरे** (*मनसः*) **मन में जो** (*अतितृण्णम्*) **व्याकुलता है,** (*बृहस्पतिः*) **विस्तृत जगत् को धारण करने वाले ईश्वर** (*तत्*) **उनको** (*दधातु*) **धारण कर दूर करें। इस** (*भुवनस्य*) **समस्त जगत् के** (*यः*) **जो** (*पतिः*) **स्वामी हैं वह** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक** (*भवतु*) **हों।**

तीसरे मन्त्र में ऋषि ईश्वर के प्रमुख गुणों पर ध्यान लगाने के निर्देश के साथ यह प्रार्थना भी करते हैं कि ईश्वर हमारी बुद्धि को उत्तम ज्ञान मार्ग की ओर प्रेरित करें।

विश्वामित्र ऋषिः। सविता देवता। २७ अक्षराणि। २ भागौ।

*प्रथमः - ४ अक्षराः, दैवी बृहती छन्दः, मध्यमः स्वरः।

**द्वितीयः - २३ अक्षराः, निचृदार्षी गायत्री छन्दः, षड्जः स्वरः।

***भूर्भुवः स्वः। **तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥**

यजुः ३६:३, यजुः २२:९, यजुः ३:३५, यजुः ३०:२, ऋग् ३:६२:१०, साम १४६२

भूः। भुवः। स्वः॥ तत्। सवितुः। वरेण्यम्। भर्गः। देवस्य। धीमहि॥

धियः। यः। नः। प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात् ॥३॥

हम (*तत्*) **उस** (*भूः*) **सृष्टि के पालनकर्त्ता,** (*भुवः*) **बुराईयों के विनाशक,** (*स्वः*) **सुखों के रचयिता** (*देवस्य*) **ईश्वर का** (*धीमहि*) **ध्यान धरे जो** (*सवितुः*) **ब्रह्माण्ड का मूल,** (*वरेण्यम्*) **वरण करने योग्य व** (*भर्गः*) **पापरहित है।** (*यः*) **वह ईश्वर** (*नः*) **हमारी** (*धियः*) **बुद्धियों को** (*प्रऽचोदयात्*) **प्रकाशरूप ज्ञान मार्ग की ओर प्रेरित करे।**

चौथे मन्त्र में ऋषि ईश्वर प्रदत ज्ञान का पालन कर उत्तम व्यवहार करने का आदेश देते हैं।

वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। २४ अक्षराणि। आर्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

कया नश्चित्रऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥४॥

यजुः ३६:४, यजुः २७:३९, ऋग् ४:३:३१:१, साम १६९, साम ६८२, अथर्व २०:९:१२४:१

कया। नः। चित्रः। आ। भुवत्। ऊती। सदावृध इति सदाऽवृधः। सखा॥ कया। शचिष्ठया। वृता ॥४॥

उस (*कया*) **सुखस्वरूप ईश्वर के द्वारा दिया गया** (*सदाऽवृधः*) **सदा उन्नति देने वाला व** (*सखा*) **मित्र के समान सदैव साथ देने वाला** (*चित्रः*) **यथार्थ ज्ञान** (*नः*) **हमारी** (*ऊती*) **रक्षा के लिए** (*आ*) **चारों ओर से** (*भुवत्*) **उपलब्ध है। हम** (*कया*) **इसके प्रयोग से बुद्धिपूर्वक** (*वृता*) **चुने हुए** (*शचिष्ठया*) **श्रेष्ठ व्यवहार को करते हुए अपना जीवन बिताएं।**

(*yat*) **Whatever** (*chhidram*) **gaps and deficiencies I may have in** (*me*) **my** (*chakṣhuṣhaḥ*) **perceptions and** (*hṛidayasya*) **feelings,** (*vaa*) **and whatever** (*atitṛiṇṇam*) **anxieties I may have in** (*me*) **my** (*manasaḥ*) **mind, may** (*bṛihaspatiḥ*) **the sustainer of this universe** (*dadhaatu*) **bear and remove** (*tat*) **them! May** (*yaḥ*) **that** (*patiḥ*) **lord** (*bhuvanasya*) **of the universe** (*bhavatu*) **be** (*sham*) **gracious and peaceful for** (*naḥ*) **us!**

In the third mantra the sage describes some basic qualities of God. While advising us to meditate on God's qualities, he also prays for our intellect to be guided on to the righteous path.

ṛiṣhiḥ vishvaamitraḥ, **devataa** savitaa, **vowels** 27, **parts** 2.

*1st part **vowels** 4, **chhandaḥ** daivee bṛihatee, **svaraḥ** madhyamaḥ.

2nd part **vowels 23, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

3. *bhoorbhuvaḥ svaḥ, **tat saviturvareṇyam bhargo devasya dheemahi, dhiyo yo naḥ prachodayaat.

Yajuḥ 36:3, Yajuḥ 3:35, Yajuḥ 22:9, Yajuḥ 30:2, Ṛig 3:62:10, Saama 1462

bhooḥ bhuvaḥ svaḥ, tat savituḥ vareṇyam bhargaḥ devasya dheemahi,
dhiyaḥ yaḥ naḥ pra-chodayaat.

(*dheemahi*) **Let's meditate upon and think** (*devasya*) **of the one with divine qualities,** (*tat*) **that God who is** (*bhooḥ*) **the sustainer of all life,** (*bhuvaḥ*) **the destroyer of evil,** (*svaḥ*) **the creator of happiness, source of all benevolence,** (*bhargaḥ*) **pure,** (*savituḥ*) **the basis of all creation and** (*vareṇyam*) **the only one worthy of having relationship with. May** (*yaḥ*) **that God,** (*prachodayaat*) **guide** (*naḥ*) **our** (*dhiyaḥ*) **mind, thoughts and determinations towards the illumination of knowledge.**

In the fourth mantra the sage directs us to properly understand the divine knowledge and engage in best behaviors.

ṛiṣhiḥ vaamadevaḥ, **devataa** indraḥ, **vowels** 24, **chhandaḥ** aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

4. kayaa nashchitra' aa bhuvadootee sadaavṛidhaḥ sakhaa, kayaa shachiṣhṭhayaa vṛitaa.

Yajuḥ 36:4, Yajuḥ 27:39, Ṛig 4:3:31:1, Saama 169, Saama 682, Atharva 20:9:124:1

kayaa naḥ chitraḥ aa bhuvat ootee sadaa-vṛidhaḥ sakhaa,
kayaa shachiṣhṭhayaa vṛitaa.

For (*naḥ*) **our** (*ootee*) **protection, the** (*chitraḥ*) **divine knowledge that** (*sadaa*) **always guides us** (*vṛidhaḥ*) **towards prosperity and** (*sakhaa*) **helps us like a friend** (*bhuvat*) **has been made available** (*aa*) **from all directions** (*kayaa*) **by the blissful God.** (*kayaa*) **Using this knowledge intelligently, may we** (*vṛitaa*) **choose and engage in** (*shachiṣhṭhayaa*) **righteous behaviors and conduct.**

पाँचवे मन्त्र में ऋषि ईश्वर प्रदत पोषण से प्राप्त बल से वृत्तियों को नष्ट करने का आदेश देते हैं।

वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। २३ अक्षराणि। निचृदार्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

कस्त्वा॑ स॒त्यो मदा॑नां॒ मꣳहि॑ष्ठो मत्स॒दन्ध॑सः। दृ॒ढा चि॑दा॒रुजे॒ वसु॑॥५॥

यजुः ३६:५, यजुः २७:४०, ऋग् ४:३:३१:२, साम ६८३, अथर्व २०:९:१२४:२

कः। त्वा॒। स॒त्यः। मदा॑नाम्। मꣳहि॑ष्ठः। म॒त्स॒त्। अन्धसः॑॥ दृ॒ढा। चि॒त्। आ॒रुज॒ऽइत्या॒रुजे॑। वसु॑॥५॥

हे मनुष्य! वह (*कः*) **सुखस्वरूप,** (*सत्यः*) **सत्य व** (*मंहिष्ठः*) **अत्यन्त दानशील ईश्वर** (*अन्धसः*) **अन्नादि** (*मदानाम्*) **आनन्ददायक पदार्थों को** (*त्वा*) **तुझे** (*मत्सत्*) **आनन्दित करने के लिए प्रदान करते हैं। यह सब तेरे लिए** (*दृढा*) **दृढ हुई** (*वसु*) **काम क्रोध आदि वृत्तियों को** (*चित्*) **भी** (*आरुजे*) **छिन्न भिन्न करने में सहायक हो।**

छठे मन्त्र में ऋषि ईश्वर को ही सब रक्षा साधनों का रचयिता बताते हैं।

वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। २१ अक्षराणि। पादनिचृदार्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

अ॒भी षु णः॒ सखी॑नामवि॒ता ज॑रितॄ॒णाम्। श॒तं भ॑वास्यू॒तिभिः॑॥६॥

यजुः ३६:६, यजुः २७:४१, ऋग् ४:३:३१:३, साम ६८४, अथर्व २०:९:१२४:३

अ॒भी। सु। नः॒। सखी॑नाम्। अ॒वि॒ता। ज॒रि॒तॄ॒णाम्॥ श॒तम्। भ॒वा॒सि॒। ऊ॒तिभिः॑॥६॥

हे प्रभो! आप (*अभी*) **सब ओर से** (*शतम्*) **असंख्य** (*सु*) **उत्तम** (*ऊतिभिः*) **रक्षण साधनों के द्वारा** (*नः*) **हमारी, हमारे** (*सखीनाम्*) **मित्रों की और** (*जरितॄणाम्*) **वयोवृध मार्गदर्शकों की** (*अविता*) **रक्षा करने वाले** (*भवासि*) **हैं।**

सातवें मन्त्र में ऋषि सबके आनन्द के लिए प्रार्थना करते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। इन्द्रो देवता। २१ अक्षराणि। वर्द्धमाना आर्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

कया॒ त्वं न॑ऽ ऊ॒त्याऽभि प्र म॑न्दसे वृषन्। कया॑ स्तो॒तृभ्य॒ऽ आ भ॑र॥७॥

यजुः ३६:७, ऋग् ८:९:९३:१९, साम १५८६

कया॑। त्वम्। नः॒। ऊ॒त्या। अ॒भि। प्र। म॒न्द॒से॒। वृ॒ष॒न्॥ कया॑। स्तो॒तृभ्य॒ इति॑ स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र॒॥७॥

(*वृषन्*) **हे सुख व आनन्द की वर्षा करने वाले ईश्वर!** (*त्वम्*) **आप** (*अभि*) **सब ओर से** (*प्र*) **भली प्रकार** (*कया*) **आनन्ददायक और शान्तिकारक** (*ऊत्या*) **रक्षा साधनों से** (*नः*) **हमें** (*मन्दसे*) **आनन्दित करते हैं। आपकी** (*स्तोतृऽभ्यः*) **स्तुति व गुणगान करने वालो को भी उन** (*कया*) **आनन्ददायक और शान्तिकारक रक्षा साधनों के द्वारा** (*आ*)(*भर*) **आनन्द प्रदान कीजिए।**

In the fifth mantra the sage directs us to utilize the strength obtained from various nourishments for destroying our vices.
ṛiṣhiḥ vaamadevaḥ, **devataa** indraḥ, **vowels** 23, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

5. kastvaa satyo madaanaam maṁhiṣhṭho matsadandhasaḥ, dṛiḍhaa chidaaruje vasu.

Yajuḥ 36:5, Yajuḥ 27:40, Ṛig 4:3:31:2, Saama 683, Atharva 20:9:124:2

kaḥ tvaa satyaḥ madaanaam maṁhiṣhṭhaḥ matsat andhasaḥ, dṛiḍhaa chit aaruje vasu.

O Human! That (*kaḥ*) **blissful** (*satyaḥ*) **embodiment of truth and** (*maṁhiṣhṭhaḥ*) **extremely benevolent God has provided** (*andhasaḥ*) **various nourishments and** (*madaanaam*) **joyful things for** (*tvaa*) **your** (*matsat*) **enjoyment. May these** (*chit*) **also help you** (*aaruje*) **shatter** (*vasu*) **the vices like lust, anger etc. that** (*dṛiḍhaa*) **have taken hold over a period of time!**

In the sixth mantra the sage declares God as the creator of all means of protection and sustenance.
ṛiṣhiḥ vaamadevaḥ, **devataa** indraḥ, **vowels** 21, **chhandaḥ** paada nichṛid aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

6. abhee ṣhu ṇaḥ sakheenaamavitaa jaritṛeeṇaam, shatam bhavaasyootibhiḥ.

Yajuḥ 36:6, Yajuḥ 27:41, Ṛig 4:3:31:3, Saama 684, Atharva 20:9:124:3

abhee su ṇaḥ sakheenaam avitaa jaritṛeeṇaam, shatam bhavaasi ootibhiḥ.

O Lord! You indeed (*bhavaasi*) **are** (*avitaa*) **protecting** (*ṇaḥ*) **us, our** (*sakheenaam*) **friends and our** (*jaritṛeeṇaam*) **aged and experienced teachers** (*abhee*) **from all directions with** (*shatam*) **numerous and** (*su*) **amazing** (*ootibhiḥ*) **means of protection.**

In the seventh mantra the sage continues prayers for happiness.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** indraḥ, **vowels** 21, **chhandaḥ** varddhamaanaa aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

7. kayaa tvan na' ootyaa'bhi pra mandase vṛiṣhan, kayaa stotṛibhya' aa bhara.

Yajuḥ 36:7, Ṛig 8:9:93:19, Saama 1586

kayaa tvam naḥ ootyaa abhi pra mandase vṛiṣhan, kayaa stotṛibhyaḥ aa bhara.

(*vṛiṣhan*) **O showerer of joy!** (*kayaa*) **With the blissful and pleasurable** (*ootyaa*) **means of protection made available from** (*abhi*) **all directions,** (*tvam*) **you** (*pra*) **diligently make** (*naḥ*) **us** (*mandase*) **happy.** (*kayaa*) **With these blissful and pleasurable means of protection, please** (*aa*)(*bhara*) **shower happiness on** (*stotṛibhyaḥ*) **everyone who sings the praises of your qualities.**

आठवें मन्त्र में ऋषि शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। इन्द्रो देवता। २० अक्षराणि। द्विपाद्विराडार्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥८॥ यजुः ३६:८

इन्द्रः। विश्वस्य। राजति॥ शम्। नः। अस्तु। द्विपद इति द्विऽपदे। शम्। चतुष्पदे। चतुःपद इति चतुःऽपदे ॥८॥

वह (*इन्द्रः*) **ऐश्वर्यवान् व सर्वशक्तिमान् ईश्वर** (*विश्वस्य*) **सारे जगत् को** (*राजति*) **प्रकाशित व व्यवस्थित रखता है। उसकी व्यवस्था के अनुसार सभी** (*द्विऽपदे*) **दो पैर वाले (मनुष्य) और** (*चतुःऽपदे*) **चार पैर वाले (पशु)** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक** (*अस्तु*) **हों।**

नौवें मन्त्र में ऋषि दैवी शक्तियों की ओर से शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। मित्रादयो लिङ्गोक्ता देवताः। ३१ अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा।

शन्नऽ इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥९॥ यजुः ३६:९, ऋग् १:१४:९०:९

शम्। नः। मित्रः। शम्। वरुणः। शम्। नः। भवतु। अर्यमा॥

शम्। नः। इन्द्रः। बृहस्पतिः। शम्। नः। विष्णुः। उरुक्रम इत्युरुऽक्रमः ॥९॥

(*मित्रः*) **मित्र के समान प्राणवायु** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक हो।** (*वरुणः*) **शुद्ध जल हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक हो।** (*अर्यमा*) **पक्षपात रहित सूर्य** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक** (*भवतु*) **हो।** (*इन्द्रः*) **वर्षा व विद्युत** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक हो।** (*बृहस्पतिः*) **ईश्वरीय ज्ञान हमारे लिए शान्तिकारक हो। इस जगत् की** (*उरुऽक्रमः*) **व्यवस्था के लिए उद्यम करने वाला** (*विष्णुः*) **सर्वव्यापी ईश्वर** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक हो।**

दसवें मन्त्र में ऋषि दैवी शक्तियों की ओर से शान्ति की प्रार्थना जारी रखते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। वातादयो देवताः। ३० अक्षराणि। विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

शन्नो वातः पवताꣳ शन्नस्तपतु सूर्यः।

शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभि वर्षतु ॥१०॥ यजुः ३६:१०

शम्। नः। वातः। पवताम्। शम्। नः। तपतु। सूर्य्यः॥

शम्। नः। कनिक्रदत्। देवः। पर्जन्यः। अभि। वर्षतु ॥१०॥

In the eighth mantra the sage offers prayers for peace and harmony.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** indraḥ, **vowels** 20, **chhandaḥ** dvipaad viraaḍ aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

8. indro vishvasya raajati, shanno'astu dvipade shañ chatuṣhpade. Yajuḥ 36:8

indraḥ vishvasya raajati, sham naḥ astu dvipade sham chatuḥ-pade.

(*indraḥ*) **Almighty God** (*raajati*) **illuminates and maintains order** (*vishvasya*) **in the entire universe. As per his guidelines may** (*dvipade*) **the bipeds (humans) and** (*chatuḥ*)(*pade*) **the quadrupeds (animals)** (*astu*) **be** (*sham*) **peaceful and harmonious** (*naḥ*) **for us!**

In the ninth mantra the sage offers prayers for peace from the divinities and the forces of nature.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataaḥ** mitraadayo liṅgoktaaḥ, **vowels** 31, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

9. shanno mitraḥ sham varuṇaḥ shanno bhavatvaryamaa,
shanna'indro bṛihaspatiḥ shanno viṣhṇuruurukramaḥ. Yajuḥ 36:9, Ṛig 1:14:90:9

sham naḥ mitraḥ sham varuṇaḥ sham naḥ bhavatu aryamaa,
sham naḥ indraḥ bṛihaspatiḥ sham naḥ viṣhṇuḥ urukramaḥ.

May (*mitraḥ*) **the friendly breath be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us! May** (*varuṇaḥ*) **the pure waters be** (*sham*) **peaceful for us! May the** (*aryamaa*) **indiscrimating sun** (*bhavatu*) **be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us! May** (*indraḥ*) **the rain and thunder be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us! May** (*bṛihaspatiḥ*) **the divine knowledge be peaceful for us! May** (*viṣhṇuḥ*) **the all pervading God** (*urukramaḥ*) **who is aptly engaged in maintenance of order in this Universe be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us!**

In the tenth mantra the sage continues the prayers for peace from the divinities and the forces of nature.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataaḥ** vaataadayaḥ, **vowels** 30, **chhandaḥ** viraaḍ aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

10. shanno vaataḥ pavataaṁ shannastapatu sooryaḥ,
shannaḥ kanikradaddevaḥ parjanyo'abhi varṣhatu. Yajuḥ 36:10

sham naḥ vaataḥ pavataam sham naḥ tapatu sooryaḥ,
sham naḥ kanikradat devaḥ parjanyaḥ abhi varṣhatu.

(*वातः*) **वायु** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक होकर** (*पवताम्*) **बहे।** (*सूर्य्यः*) **सूर्य** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक होकर** (*तपतु*) **तपे।** (*कनिक्रदत्*) **गरजने वाले** (*देवः*) **दिव्य** (*पर्जन्यः*) **मेघ** (*अभि*) **सभी ओर** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक होकर** (*वर्षतु*) **बरसें।**

ग्यारहवें मन्त्र में ऋषि दैवी शक्तियों की ओर से शान्ति की प्रार्थना जारी रखते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। लिङ्गोक्ता देवताः। ६० अक्षराणि। आर्ष्यतिशक्वरी* छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

*कुछ विद्वानों ने १६ अक्षरों वाली पहली पङ्क्ति को द्विपदा गायत्री और उसके बाद ४४ अक्षरों वाले हिस्से को त्रिष्टुप् छन्द में रखा है।

अहा॑नि॒ शं भव॑न्तु नः॒ शꣳ रात्री॒: प्रति॑ धीयताम्।

शन्न॑ऽ इन्द्रा॒ग्नी भ॑वता॒मवो॑भिः॒ शन्न॒ऽ इन्द्रा॒वरु॑णा रा॒तह॑व्या।

शन्न॑ऽ इन्द्रापू॒षणा॒ वाज॑सातौ॒ शमिन्द्रा॒सोमा॑ सुवि॒ताय॒ शंयोः॥११॥

यजुः ३६:११, ऋग् ७:३:३५:१, अथर्व १९:२:१०:१

अहा॑नि। शम्। भव॑न्तु। नः॒। शम्। रात्रीः॑। प्रति॑। धी॒य॒ता॒म्॥ शम्। नः॒। इ॒न्द्रा॒ग्नी इती॑न्द्राग्नी। भ॒व॒ता॒म्। अवोभि॒रित्यवः॑ऽभिः। शम्। नः॒। इन्द्रा॒वरु॑णा। रा॒तह॒व्येति॑ रा॒तऽह॑व्या॥ शम्। नः॒। इ॒न्द्रा॒पू॒षणा॑। वाज॑साता॒विति॒ वाज॑ऽसातौ। शम्। इन्द्रा॒सोमा॑। सु॒वि॒ताय॑। शंयोः॥११॥

(*अहानि*) **दिन** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक** (*भवन्तु*) **हो।** (*रात्रीः*) **रात्री हमारे** (*शम्*) **कल्याण को** (*प्रति*)(*धीयताम्*) **धारण करे। हे ईश्वर! आपके बनाये प्राकृतिक ऊर्जाएं व साधन हमारे लिए** (*शंयोः*) **शान्तिकारक हों।** (*इन्द्राग्नी*) **विद्युत और अग्नि** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक** (*भवताम्*) **हो हमारे** (*अवःऽभिः*) **रक्षा साधन बनें।** (*इन्द्रावरुणा*) **जल और जल के प्रवाह का बल** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक हो हमें** (*रातऽहव्या*) **ग्रहण करने योग्य सुख के साधन प्रदान करें।** (*इन्द्रापूषणा*) **पृथ्वी और भूगर्भ की ऊर्जा** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक हों और उनसे प्राप्त पोषण हमें** (*वाजऽसातौ*) **मन में चलते अन्तर्द्वन्द को जीतने में सहायता करे।** (*इन्द्रासोमा*) **शीतल वायु और उसके प्रवाह का बल हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक हो हमें** (*सुविताय*) **उत्तम कर्मों की ओर प्रेरित करें।**

इस मन्त्र में अग्नि, वरुण, पूषण और सोम को समाज के चार वर्ण, क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भी मान सकते हैं। इन चारों वर्णों के लोग समाजिक हित में अपनी अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए सबके लिए शान्तिकारक हों।

May (*pavataam*) **the flow of** (*vaataḥ*) **the air be** (*sham*) **peaceful for** (*naḥ*) **us! May** (*tapatu*) **the heat from** (*sooryaḥ*) **the sun be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us! May** (*varṣhatu*) **the precipitation** (*abhi*) **in all directions, from the** (*devaḥ*) **divine** (*kanikradat*) **thundering** (*parjanyaḥ*) **clouds be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us!**

The eleventh mantra the sage continues the prayers for peace from the divinities and the forces of nature.

ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataaḥ** liṅgoktaaḥ, **vowels** 60, **chhandaḥ** aarṣhy atishakvaree*, **svaraḥ** pañchamaḥ.

*Some scholars have also classified the first line of this mantra containing 16 vowels in the dvipadaa gaayatree chhandaḥ and the remaining portion containing 44 vowels in the triṣhṭup chhanda

11. ahaani sham bhavantu naḥ shaṁ raatreeḥ prati dheeyataam,
shanna' indraagnee bhavataamavobhiḥ shanna' indraavaruṇaa raatahavyaa,
shanna' indraapooṣhaṇaa vaajasaatau shamindraasomaa suvitaaya shañyoḥ. Yajuḥ 36:11, Ṛig 7:3:35:1, Atharva 19:2:10:1

ahaani sham bhavantu naḥ sham raatreeḥ prati dheeyataam,
sham naḥ indra-agnee bhavataam avobhiḥ sham naḥ indraa-varuṇaa raata-havyaa,
sham naḥ indraa-pooṣhaṇaa vaaja-saatau sham indraa-somaa suvitaaya shañyoḥ.

May (*ahaani*) **the days** (*bhavantu*) **be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us and** (*raatreeḥ*) **the nights** (*prati*)(*dheeyataam*) **be the holder of our** (*sham*) **welfare! May the forces of nature and the natural sources of energies** (*shañyoḥ*) **be favorable for us! May** (*indra*) **the thunder and** (*agnee*) **the fire** (*bhavataam*) **be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us and be there for our** (*avobhiḥ*) **protection! May** (*varuṇaa*) **the waters and** (*indraa*) **the energies from the water cycle be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us and provide us** (*raata*)(*havyaa*) **virtuous things and thoughts! May** (*pooṣhaṇaa*) **the earth and** (*indraa*) **the geothermal energies be** (*sham*) **peaceful for us and may their nourishments help win the** (*vaaja-saatau*) **the internal strife ongoing in our minds between twin forces of good and evil! May** (*somaa*) **the airs and** (*indraa*) **the wind energy be** (*sham*) **peaceful** (*naḥ*) **for us and** (*suvitaaya*) **inspire and lead us towards good deeds!**

In this mantra *Agni*, *Varuṇa*, *Pooṣhaṇa* and *Soma* can also be viewed as people from the four *varṇas*, i.e. the scholars (*brahmanas*), the warriors (*kṣhtriyas*), the farmers and merchants (*vaishyas*) and the servants (*shoodras*) respectively. May all of them continue to use their energies in performing deeds for the greater good of the society!

बारहवें मन्त्र में ऋषि कल्याण के लिए प्रार्थना जारी रखते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। आपो देवता। २४ अक्षराणि। आर्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

शन्नो॑ देवीर॒भिष्ट॑य॒ऽआपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शंयोर॒भि स्र॑वन्तु नः ॥१२॥

यजुः ३६:१२, ऋग् १०:१:९:४, साम ३३, अथर्व १:१:६:१

शम्। नः। देवीः। अभिष्टये। आपः। भवन्तु। पीतये॑॥ शम्। योः। अभि। स्रवन्तु। नः ॥१२॥

हे (*देवीः*) **दिव्यगुणों वाले ईश्वर! हमारी सुखी होने की** (*अभिष्टये*) **इच्छाओं को पूर्ण कीजिए।** (*आपः*) **जल के स्रोत** (*नः*) **हमारी** (*पीतये*) **प्यास को बुझाकर हमारे लिए** (*शम्*) **कल्याणकारी** (*भवन्तु*) **हों।** (*योः*) **आप** (*अभि*) **सभी ओर से** (*नः*) **हम पर** (*शम्*) **कल्याण की** (*स्रवन्तु*) **वर्षा कीजिए।**

तेरहवें मन्त्र में ऋषि घरों के खुले और हवादार होने के महत्त्व पर विचार करते हैं।

मेधातिथिर्ऋषिः। पृथिवी देवता। २३ अक्षराणि। पिपीलिकामध्या निचृदार्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

स्यो॒ना पृ॑थिवि नो भवानृक्ष॒रा नि॒वेश॑नी। यच्छा॑ नः॒ शर्म॑ स॒प्रथाः॑ ॥१३॥

यजुः ३६:१३, यजुः ३५:२१, ऋग् १:५:२२:१५, अथर्व १८:२:२:१९

स्यो॒ना। पृ॒थि॒वि॒। नः॒। भ॒व॒। अ॒नृ॒क्ष॒रा। नि॒वेश॒नीति॑ नि॒ऽवेश॑नी ॥ यच्छ॑। नः॒। शर्म्म॑। स॒प्रथा॒ इति॑ स॒ऽप्रथाः॑ ॥१३॥

(*पृथिवि*) **हे पृथ्वी! तू** (*नः*) **हमारे लिए** (*अनृक्षरा*) **काँटों, बाधाओं और शत्रुओं से रहित,** (*निऽवेशनी*) **निवास करने योग्य व** (*स्योना*) **सुखकारिणी** (*भव*) **हो। हमारा निवास** (*सऽप्रथाः*) **सब ओर से खुला और विस्तृत हो** (*नः*) **हमें** (*शर्म्म*) **सुख** (*यच्छ*) **दे।**

चौदहवे मन्त्र में ऋषि जल के महत्त्व पर विचार करते हैं।

सिन्धुद्वीप ऋषिः। आपो देवता। २४ अक्षराणि। आर्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑ऽ ऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हे रणा॑य॒ चक्ष॑से ॥१४॥

यजुः ३६:१४, यजुः ११:५०, ऋग् १०:१:९:१, साम १८३७, अथर्व १:१:५:१

आपः॑। हि। स्थ। म॒यो॒भुव॒ इति॑ मय॒:ऽभुवः॑। ताः। नः॒। ऊ॒र्जे। द॒धा॒त॒न॒॥ म॒हे। रणा॑य। चक्ष॑से ॥१४॥

(*आपः*) **जल** (*हि*) **ही** (*मयःऽभुवः*) **आनन्द कारक** (*स्थ*) **हैं।** (*ताः*) **वे सब जल के स्रोत** (*नः*) **हमारे लिए** (*ऊर्जे*) **ऊर्जा को** (*दधातन*) **धारण करें। ईश्वर कृत** (*महे*) **महान** (*रणाय*) **रमणीक सृष्टि को देखने के लिए जल हमारी** (*चक्षसे*) **नेत्र शक्ति को बढ़ाए।**

In the twelfth mantra the sage continues the prayers for welfare.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** aapaḥ, **vowels** 24, **chhandaḥ** aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

12. shanno deveerabhiṣhṭaya 'aapo bhavantu peetaye,
shañyorabhi sravantu naḥ.

Yajuḥ 36:12, Ṛig 10:1:9:4, Saama 33, Atharva 1:1:6:1

sham naḥ deveeḥ abhiṣhṭaye aapaḥ bhavantu peetaye, sham yoḥ abhi sravantu naḥ.

(*abhiṣhṭaye*) **For attainment of the desirable happiness, may** (*deveeḥ*) **the divine** (*aapaḥ*) **waters** (*bhavantu*) **be** (*peetaye*) **for our drink and fulfillment and be** (*sham*) **propitious** (naḥ) **for us;** (*sravantu*) **shower** (*naḥ*) **on us** (*sham yoḥ*) **blessings and happiness** (*abhi*) **from all directions.**

In the thirteenth mantra the sage discusses the importance of open and airy homes.
ṛiṣhiḥ medhaatithiḥ, **devataa** pṛithivee, **vowels** 23, **chhandaḥ** pipeelikaa madhyaa nichṛid aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

13. syonaa pṛithivi no bhavaanṛikṣharaa niveshanee,
yachchhaa naḥ sharma saprathaaḥ.

Yajuḥ 36:13, Yajuḥ 35:21, Ṛig 1:5:22:15, Atharva 18:2:2:19

syonaa pṛithivi naḥ bhava anṛikṣharaa niveshanee, yachchha naḥ sharma saprathaaḥ.

(*pṛithivi*) **O Earth! May you** (*bhava*) **be** (*anṛikṣharaa*) **free from impediments and enemies,** (*niveshanee*) **suitable for habitation and** (*syonaa*) **blissful** (*naḥ*) **for us! May our abodes be** (*saprathaaḥ*) **airy and expansive and** (*yachchha*) **keep** (*naḥ*) **us** (*sharma*) **happy.**

In the fourteenth mantra the sage discusses the importance of the water.
ṛiṣhiḥ sindhudveepaḥ, **devataa** aapaḥ, **vowels** 24, **chhandaḥ** aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

14. aapo hi ṣhṭhaa mayobhuvastaa na' oorje dadhaatana,
mahe raṇaaya chakṣhase.

Yajuḥ 36:14, Yajuḥ 11:50, Ṛig 10:1:9:1, Saama 1837, Atharva 1:1:5:1

aapaḥ hi stha mayaḥ-bhuvaḥ taaḥ naḥ oorje dadhaatana, mahe raṇaaya chakṣhase.

(*aapaḥ*) **Water** (*hi*) **indeed** (*stha*) **is** (*bhuvaḥ*) **the source of** (*mayaḥ*) **happiness. May** (*taaḥ*) **these sources of water** (*dadhaatana*) **hold and provide** (*naḥ*) **us** (*oorje*) **energy! May the water strengthen our** (*chakṣhase*) **eyesight and enable us to see this** (*mahe*) **great and** (*raṇaaya*) **beautiful creation!**

पन्द्ररहवे मन्त्र में ऋषि जल को धीरे धीरे रस लेकर पीने के महत्त्व पर विचार करते हैं।

सिन्धुद्वीप ऋषिः। आपो देवता। २४ अक्षराणि। आर्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥१५॥

यजुः ३६:१५, यजुः ११:५१, ऋग् १०:१:९:२, साम १८३८, अथर्व १:१:५:२

यः। वः। शिवतम इति शिवऽतमः। रसः। तस्य। भाजयत। इह। नः ॥ उशतीरिवेत्युशतीःऽइव। मातरः ॥१५॥

हे ईश्वर! (*उशतीःऽइव*) **जैसे हितैषी** (*मातरः*) **माताएं अपने बच्चों को दुग्धपान कराती हैं वैसे ही** (*वः*) **आपके द्वारा बनाए गए** (*इह*) **इस जगत् के जल के स्रोतों** (*तस्य*) **का** (*यः*) **जो** (*शिवऽतमः*) **उत्तम कल्याणकारी** (*रसः*) **रस है वह** (*नः*) **हमारे** (*भाजयत*) **सेवन के लिए प्राप्त होता रहे।**

सोलहवे मन्त्र में ऋषि जल के महत्त्व पर विचार करते हैं।

सिन्धुद्वीप ऋषिः। आपो देवता। २४ अक्षराणि। आर्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥१६॥

यजुः ३६:१६, यजुः ११:५२, ऋग् १०:१:९:३, साम १८३९, अथर्व १:१:५:३

तस्मै। अरम्। गमाम। वः। यस्य। क्षयाय। जिन्वथ ॥ आपः। जनयथ। च। नः ॥१६॥

(*आपः*) **हे जल!** (*यस्य*) **जिस शान्ति** (*च*) **और स्फूर्ति को हमारे अन्दर** (*क्षयाय*) **निवास कराने के लिए तुम हमें** (*जिन्वथ*) **तृप्त करते हो,** (*तस्मै*) **उस प्रयोजन के लिए हम** (*वः*) **तुम्हें** (*अरम्*) **पर्याप्त रूप से** (*गमाम*) **प्राप्त कर लें। तुम** (*नः*) **हमें** (*जनयथ*) **शक्ति दे विकसित करो।**

सत्रहवे मन्त्र में सब ओर से शान्ति के लिए प्रार्थना है।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। ईश्वरो देवता। ५७ अक्षराणि। भुरिगार्षी शक्वरी छन्दः। धैवतः स्वरः।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१७॥ यजुः ३६:१७, अथर्व १९:१:९:१४

द्यौः। शान्तिः। अन्तरिक्षम्। शान्तिः। पृथिवी। शान्तिः। आपः। शान्तिः। ओषधयः। शान्तिः ॥ वनस्पतयः। शान्तिः। विश्वे। देवाः। शान्तिः। ब्रह्म। शान्तिः। सर्वम्। शान्तिः। शान्तिः। एव। शान्तिः। सा। मा। शान्तिः। एधि ॥१७॥

In the fifteenth mantra sage discusses the importance of drinking the water slowly instead of gulping.
ṛiṣhiḥ sindhudveepaḥ, **devataa** aapaḥ, **vowels** 24, **chhandaḥ** aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

15. yo vaḥ shivatamo rasastasya bhaajayateha naḥ,
ushateeriva maataraḥ.

Yajuḥ 36:15, Yajuḥ 11:51, Ṛig 10:1:9:2, Saama 1838, Atharva 1:1:5:2

yaḥ vaḥ shivatamaḥ rasaḥ tasya bhaajayata iha naḥ, ushateeaḥ-iva maataraḥ.

O God! (*iva*) **As** (*ushateeaḥ*) **the benevolent** (*maataraḥ*) **mothers provide milk for their children, may** (*vaḥ*) **your various sources of water on** (*iha*) **the earth continuously provide** (*tasya*) **their** (*rasaḥ*) **juices** (*yaḥ*) **that are** (*shivatamaḥ*) **most beneficial for** (*naḥ*) **our** (*bhaajayata*) **consumption!**

In the sixteenth mantra the sage discusses the importance of the water.
ṛiṣhiḥ sindhudveepaḥ, **devataa** aapaḥ, **vowels** 24, **chhandaḥ** aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

16. tasmaa'araṅ gamaama vo yasya kṣhayaaya jinvatha,
aapo janayathaa cha naḥ.

Yajuḥ 36:16, Yajuḥ 11:52, Ṛig 10:1:9:3, Saama 1839, Atharva 1:1:5:3

tasmai aram gamaama vaḥ yasya kṣhayaaya jinvatha, aapaḥ janayatha cha naḥ.

(*aapaḥ*) **O Waters! You** (*jinvatha*) **fulfill us** (*yasya*) **in order to make both calmness and agility** (*kṣhayaaya*) **reside in us. May we** (*aram*) **sufficiently** (*gamaama*) **obtain** (*vaḥ*) **you** (*tasmai*) **for that purpose! Please provide** (*naḥ*) **us with** (*janayatha*) **vitality** (*cha*) **and vigour.**

In the seventeenth mantra the sage offers prayers for universal peace.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** eeshvaraḥ, **vowels** 57, **chhandaḥ** bhurig aarṣhee shakvaree, **svaraḥ** dhaivataḥ.

17. dyauḥ shaantirantarikṣhaṁ shaantiḥ pṛithivee shaantiraapaḥ
shaantiroṣhadhayaḥ shaantiḥ,
vanaspatayaḥ shaantirvishve devaaḥ shaantirbrahma shaantiḥ sarvaṁ
shaantiḥ shaantireva shaantiḥ saa maa shaantiredhi.

Yajuḥ 36:17, Atharva 19:1:9:14

dyauḥ shaantiḥ antarikṣham shaantiḥ pṛithivee shaantiḥ aapaḥ shaantiḥ oṣhadhayaḥ shaantiḥ, vanaspatayaḥ shaantiḥ vishve devaaḥ shaantiḥ brahma shaantiḥ sarvam shaantiḥ shaantiḥ eva shaantiḥ saa maa shaantiḥ edhi.

सब (*द्यौः*) **ग्रह नक्षत्रादि हमारे लिए** (*शान्तिः*) **शान्तिकारक हों;** (*अन्तरिक्षम्*) **अन्तरिक्ष** (*शान्तिः*) **शान्तिकारक हो;** (*पृथिवी*) **पृथ्वी** (*शान्तिः*) **शान्तिकारक हो;** (*आपः*) **जल व उसके स्रोत** (*शान्तिः*) **शान्तिकारक हों;** (*ओषधयः*) **ओषधियाँ** (*शान्तिः*) **शान्तिकारक हों;** (*वनस्पतयः*) **वृक्ष लता आदि** (*शान्तिः*) **शान्तिकारक हों;** (*विश्वे*) **समस्त जगत् के** (*देवाः*) **विद्वान् हमें** (*शान्तिः*) **शान्ति का मार्ग दिखाएं;** (*ब्रह्म*) **ईश्वर से हम** (*शान्तिः*) **शान्ति की प्रेरणा लें;** (*सर्वम्*) **सब ओर से** (*शान्तिः*) **शान्ति हो;** (*शान्तिः*) **शान्ति** (*एव*) **ही** (*शान्तिः*) **शान्ति हो;** (*मा*) **मुझे** (*शान्तिः*) **शान्ति** (*एधि*) **प्राप्त हो और** (*सा*) **वह शान्ति सबके लिए भी हो।**

अट्ठारहवे मन्त्र में ऋषि सौहार्द की लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। ईश्वरो देवता। ४९ अक्षराणि। भुरिगार्षी जगती छन्दः। निषादः स्वरः।

दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥१८॥

यजुः ३६:१८

दृते। दृꣳह। मा। मित्रस्य। मा। चक्षुषा। सर्वाणि। भूतानि। सम्। ईक्षन्ताम् ॥

मित्रस्य। अहम्। चक्षुषा। सर्वाणि। भूतानि। सम्। ईक्षे ॥ मित्रस्य। चक्षुषा। सम्। ईक्षामहे ॥१८॥

(*दृते*) **हे अज्ञान के नाशक!** (*मा*) **मुझे** (*दृंह*) **दृढनिश्चयी बनाईये।** (*सर्वाणि*) **समस्त** (*भूतानि*) **प्राणी** (*मा*) **मुझे** (*मित्रस्य*) **मित्रता की** (*चक्षुषा*) **दृष्टि से** (*सम्*)(*ईक्षन्ताम्*) **देखें।** (*अहम्*) **मैं भी** (*सर्वाणि*) **सब** (*भूतानि*) **प्राणियों को** (*मित्रस्य*) **मित्रता की** (*चक्षुषा*) **दृष्टि से** (*सम्*)(*ईक्षे*) **देखूं। हम सभी एकदूसरे को** (*मित्रस्य*) **मित्रता की** (*चक्षुषा*) **दृष्टि से** (*सम्*)(*ईक्षामहे*) **देखें।**

उन्नीसवे मन्त्र में ऋषि ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार जीवन बिताने का महत्त्व बताते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। ईश्वरो देवता। २१ अक्षराणि। पादनिचृदार्षी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

दृते दृꣳह मा। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम् ॥१९॥ यजुः ३६:१९

दृते। दृꣳह। मा ॥

ज्योक्। ते। संदृशीति सम्ऽदृशि। जीव्यासम्। ज्योक्। ते। संदृशीति सम्ऽदृशि। जीव्यासम् ॥१९॥

May (*dyauḥ*) **all of the celestial bodies** (*shaantiḥ*) **be peaceful for us! May** (*pṛithivee*) **the earth** (*shaantiḥ*) **be peaceful! And May** (*antarikṣham*) **the space between the celestial bodies** (*shaantiḥ*) **be peaceful! May** (*aapaḥ*) **the waters and their sources** (*shaantiḥ*) **be peaceful! May** (*oṣhadhayaḥ*) **the medicinal herbs** (*shaantiḥ*) **be peaceful! May** (*vanaspatayaḥ*) **the trees and plants** (*shaantiḥ*) **be peaceful! May** (*devaaḥ*) **all of the scholars** (*vishve*) **of the World guide us towards** (*shaantiḥ*) **peace! May** (*brahma*) **God keep on inspiring us towards** (*shaantiḥ*) **peace! May** (*sarvam*) **everything** (*shaantiḥ*) **be peaceful! May there** (*shaantiḥ*) **be peace everywhere** (*eva*) **and only** (*shaantiḥ*) **peace! May** (*maa*) **I** (*edhi*) **get** (*shaantiḥ*) **peace and may** (*saa*) **that peace be there for everyone!**

In the eighteenth mantra the sage offers prayers for the universal harmony and friendship.

ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** eeshvaraḥ, **vowels** 49, **chhandaḥ** bhurig aarṣhee jagatee, **svaraḥ** niṣhaadaḥ.

18. dṛite dṛiṁha maa mitrasya maa chakṣhuṣhaa sarvaaṇi bhootaani sameekṣhantaam,
mitrasyaahañ chakṣhuṣhaa sarvaaṇi bhootaani sameekṣhe,
mitrasya chakṣhuṣhaa sameekṣhaamahe. Yajuḥ 36:18

dṛite dṛiṁha maa mitrasya maa chakṣhuṣhaa sarvaaṇi bhootaani sam eekṣhantaam,
mitrasya aham chakṣhuṣhaa sarvaaṇi bhootaani sam eekṣhe,
mitrasya chakṣhuṣhaa sam eekṣhaamahe.

(*dṛite*) **O remover of ignorance and darkness! Please provide** (*maa*) **me with** (*dṛiṅha*) **fortitude and resolve. May** (*sarvaaṇi*) **all of** (*bhootaani*) **the living beings** (*sam*)(*eekṣhantaam*) **view** (*maa*) **me** (*chakṣhuṣhaa*) **with the eye** (*mitrasya*) **of a friend! May** (*aham*) **I** (*sameekṣhe*) **view** (*sarvaaṇi*) **all of** (*bhootaani*) **the living beings** (*chakṣhuṣhaa*) **with the eye** (*mitrasya*) **of a friend! May all of us** (*sam*)(*eekṣhaamahe*) **view each other** (*chakṣhuṣhaa*) **with the eye** (*mitrasya*) **of a friend!**

In the nineteenth mantra the sage discusses the importance of living our lives in accordance with the Vedas.

ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** eeshvaraḥ, **vowels** 21, **chhandaḥ** paada nichṛid aarṣhee gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

19. dṛite dṛiṁha maa,
jyokte sandṛishi jeevyaasañ jyokte sandṛishi jeevyaasam. Yajuḥ 36:19

dṛite dṛiṁha maa, jyok te sam-dṛishi jeevyaasam jyok te sam-dṛishi jeevyaasam.

(*दृते*) **हे मोह आदि वृत्तियों के नाशक!** (*मा*) **मुझमें धर्म को** (*दृंह*) **दृढ कीजिए। मैं आपके दिए** (*ज्योक्*) **ज्ञान का पालन करते हुए** (*ते*) **आपके** (*सम्ऽदृशि*) **मार्गदर्शन में अपना** (*जीव्यासम्*) **जीवन व्यतीत करूँ। मैं आपके दिए** (*ज्योक्*) **ज्ञान का पालन करते हुए** (*ते*) **आपके** (*सम्ऽदृशि*) **मार्गदर्शन में** (*जीव्यासम्*) **दीर्घकाल तक अपना जीवन व्यतीत करूँ।**

बीसवे मन्त्र में ऋषि ईश्वर को नमन और कल्याण की प्रार्थना करते हैं।

लोपामुद्रा ऋषिः। अग्निर्देवता। ३७ अक्षराणि। भुरिगार्षी बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः।

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे।

अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥२०॥ यजुः ३६:२०, यजुः१७:११

नमः। ते। हरसे। शोचिषे। नमः। ते। अस्तु। अर्चिषे॥

अन्यान्। ते। अस्मत्। तपन्तु। हेतयः। पावकः। अस्मभ्यम्। शिवः। भव ॥२०॥

(*हरसे*) **हे पाप और रोग हरने वाले,** (*शोचिषे*) **हे शुद्ध करने वाले!** (*ते*) **आपको हमारा** (*नमः*) **नमन।** (*अर्चिषे*) **हे स्तुति करने योग्य** (*ते*) **आपके लिए हमारा** (*नमः*) **नमस्कार** (*अस्तु*) **है। अपनी** (*हेतयः*) **ज्वालाओं से** (*ते*) **आप** (*अन्यान्*) **अन्यों (हमारे शत्रुओं) को** (*तपन्तु*) **ताड़ना दीजिये और** (*अस्मत्*) **हमें** (*पावकः*) **पवित्र कीजिए। आप** (*अस्मभ्यम्*) **हमारे लिए** (*शिवः*) **कल्याणकारी** (*भव*) **हों।**

इक्कीसवे मन्त्र में ऋषि ईश्वर को नमन करते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। ईश्वरो देवता। ३१ अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

नमस्तेऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥२१॥

यजुः ३६:२१, अथर्व १:३:१३:१

नमः। ते। अस्तु। विद्युत इति विऽद्युते। नमः। ते। स्तनयित्नवे॥

नमः। ते। भगवन्निति भगऽवन्। अस्तु। यतः। स्वरिति स्वः। समीहसे इति सम्ऽईहसे ॥२१॥

(*भगऽवन्*) **हे भगवन्!** (*यतः*) **जिन साधनों से आप हमारे लिए** (*स्वः*) **सुख के लिए** (*सम्ऽईहसे*) **सम्यक् चेष्टा करते हैं उनके लिए** (*ते*) **आपको हमारा** (*नमः*) **नमस्कार** (*अस्तु*) **है।** (*विऽद्युते*) **बिजुली की तरह प्रकाश फैलाने के लिए** (*ते*) **आपको** (*नमः*) **नमस्कार** (*अस्तु*) **है। मेघों की तरह** (*स्तनयित्नवे*) **गर्जना कर ज्ञान देने के लिए** (*ते*) **आपको** (*नमः*) **नमन।**

(*dṛite*) **O destroyer of vices! Please** (*dṛiṅha*) **firm up the righteous behavior in** (*maa*) **myself. In** (*jyok*) **accordance with your Vedic wisdom, may I** (*jeevyaasam*) **spend my life under** (*te*) **your** (*sam*)(*dṛishi*) **guidance! In** (*jyok*) **accordance with your Vedic wisdom, may I** (*jeevyaasam*) **spend my life under** (*te*) **your** (*sam*)(*dṛishi*) **guidance!***
*Repetition is for emphasis.

In the twentieth mantra the sage offers obeisance to God and offers prayers for welfare. **ṛiṣhiḥ** lopaamudraaḥ, **devataa** agniḥ, **vowels** 37, **chhandaḥ** bhurig aarṣhee bṛihatee, **svaraḥ** madhyamaḥ.

20. namaste harase shochiṣhe namaste'astvarchiṣhe,
anyaan̐ste'asmattapantu hetayaḥ paavako'asmabhyam̐ shivo bhava.

Yajuḥ 36:20, Yajuḥ 17:11

namaḥ te harase shochiṣhe namaḥ te astu archiṣhe,
anyaan te asmat tapantu hetayaḥ paavakaḥ asmabhyam shivaḥ bhava.

(*harase*) **O removers of sin and sickness!** (*shochiṣhe*) **O purifier! We** (*namaḥ*) **bow** (*te*) **to you.** (*archiṣhe*) **O worthy of praise! Our** (*namaḥ*) **obeisance** (*astu*) **is** (*te*) **for you. With your** (*hetayaḥ*) **energies may** (*te*) **you** (*paavakaḥ*) **purify** (*asmat*) **us and** (*tapantu*) **torment** (*anyaan*) **others (our enemies)! May you** (*bhava*) **be** (*shivaḥ*) **favorable and auspicious** (*asmabhyam*) **for us!**

In the twenty-first mantra the sage again offers obeisance to God.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** eeshvaraḥ, **vowels** 31, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

21. namaste'astu vidyute namaste stanayitnave,
namaste bhagavannastu yataḥ svaḥ sameehase. Yajuḥ 36:21, Atharva 1:3:13:1

namaḥ te astu vidyute namaḥ te stanayitnave,
namaḥ te bhagavan astu yataḥ svaḥ sam-eehase.

(*bhagavan*) **O God! We** (*namaḥ*)(*astu*) **bow** (*te*) **to you and thank you for** (*yataḥ*) **those means through which you** (*sam*) **consistently** (*eehase*) **ensure our** (*svaḥ*) **happiness. We** (*namaḥ*)(*astu*) **bow** (*te*) **to you** (*vidyute*) **for illuminating our pathways. We** (*namaḥ*) **bow** (*te*) **to you** (*stanayitnave*) **for loudly providing us with the knowledge of the Vedas.**

बाईसवे मन्त्र में ऋषि अभयदान के लिए प्रार्थना करते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। ईश्वरो देवता। २९ अक्षराणि। भुरिगार्ष्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः।

यतो॑यतः स॒मीह॑से॒ ततो॑ नो॒ऽअभ॑यं कुरु।

शं नः॑ कुरु प्र॒जाभ्योऽभ॑यं नः प॒शुभ्यः॑ ॥२२॥ यजुः ३६:२२

यतो॑यत॒ इति॑ यतः॑ऽयतः। स॒मीह॑स॒ इति॑ स॒म्ऽईह॑से। ततः॑। नः॒। अभ॑यम्। कु॒रु॒॥

शम्। नः॒। कु॒रु॒। प्र॒जाभ्य॒ इति॑ प्र॒जाऽभ्यः॑। अभ॑यम्। नः॒। प॒शुभ्य॒ इति॑ प॒शुऽभ्यः॑ ॥२२॥

(*यतःऽयतः*) **जो जो हमारे सुख के लिए आपकी** (*सम्ऽईहसे*) **सम्यक् चेष्टाएं हैं** (*ततः*) **वह सब** (*नः*) **हमें** (*अभयम्*) **भयमुक्त** (*कुरु*) **करें।** (*प्रजाऽभ्यः*) **सब मनुष्य** (*नः*) **हमारे लिए** (*शम्*) **शान्तिकारक हो।** (*पशुऽभ्यः*) **पशुओं से भी** (*नः*) **हमें** (*अभयम्*) **भयमुक्त** (*कुरु*) **करें।**

तेईसवे मन्त्र में ऋषि रोगों के नाश के लिए प्रार्थना करते हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। सोमो देवता। ३१ अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

सु॒मि॒त्रिया न॒ऽआप॒ऽओष॑धयः सन्तु दु॒र्मित्रि॒यास्तस्मै॑ सन्तु॒।

यो॒ऽस्मान् द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्मः ॥२३॥

यजुः ३६:२३, यजुः ६:२२, यजुः २०:१९, यजुः ३५:१२, यजुः ३८:२३

सु॒मि॒त्रिया इति॑ सुऽमित्रि॒याः। नः॒। आपः॑। ओष॑धयः। स॒न्तु॒। दु॒र्मि॒त्रि॒या इति॑ दुःऽमित्रि॒याः। तस्मै॑। स॒न्तु॒॥

यः। अ॒स्मान्। द्वेष्टि॑। यम्। च॒। व॒यम्। द्वि॒ष्मः ॥२३॥

(*आपः*) **जल और** (*ओषध्यः*) **ओषधियाँ** (*नः*) **हमारे** (*सुऽमित्रियाः*) **मित्र** (*सन्तु*) **होकर हमें निरोगी रखने वाले हो और रोगों के** (*दुःऽमित्रियाः*) **शत्रु** (*सन्तु*) **हो** (*तस्मै*) **वह उन्हें नष्ट करे।** (*यः*) **जो** (*अस्मान्*) **हम धर्मात्माओं से** (*द्वेष्टि*) **द्वेष करें** (*च*) **और** (*यम्*) **जिनसे** (*वयम्*) **हम** (*द्विष्मः*) **द्वेष करे वह उनको भी नष्ट करें।**

चौबीसवे मन्त्र में ऋषि स्वस्थ व दीर्घायु के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः। सूर्यो देवता। ६७ अक्षराणि। भुरिग् ब्रह्मी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

तच्चक्षु॑र्दे॒वहि॑तं पु॒रस्ता॑च्छु॒क्रमुच्च॑रत्।

पश्ये॑म श॒रदः॑ श॒तं जीवे॑म श॒रदः॑ श॒तꣳ शृणु॑याम श॒रदः॑ श॒तं प्र ब्र॑वाम श॒रदः॑

श॒तमदी॑नाः स्याम श॒रदः॑ श॒तं भूय॑श्च श॒रदः॑ श॒तात् ॥२४॥

यजुः ३६:२४, ऋग् ७:४:६६:१६, अथर्व १९:७:६७:१-२

In the twenty-second mantra the sage offers a prayer for sparing us from fear.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** eeshvaraḥ, **vowels** 29, **chhandaḥ** bhurig aarṣhy uṣhṇik, **svaraḥ** ṛiṣhabhaḥ.

22. yatoyataḥ sameehase tato no'abhayaṅ kuru,
shan naḥ kuru prajaabhyo'bhayan naḥ pashubhyaḥ. Yajuḥ 36:22

yataḥ-yataḥ sameehase tataḥ naḥ abhayam kuru,
sham naḥ kuru prajaabhyaḥ abhayam naḥ pashubhyaḥ.

(*yataḥ*)(*yataḥ*) **Whatever** (*sameehase*) **efforts you have made to ensure our happiness, may** (*tataḥ*) **those also** (*kuru*) **help** (*naḥ*) **us** (*abhayam*) **remove any traces of fear from our mind! May** (*prajaabhyaḥ*) **all of the human race** (*sham*) **be peaceful** (*naḥ*) **for us! Please** (*kuru*) **make** (*naḥ*) **us free from** (*abhayam*) **fear** (*pashubhyaḥ*) **from the animals.**

In the twenty-third mantra the sage offers a prayer to keep us free from sickness.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** somaḥ, **vowels** 31, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

23. sumitriyaa na'aapa'oṣhadhayaḥ santu durmitriyaastasmai santu,
yo'smaan dveṣhṭi yañ cha vayan dviṣhmaḥ.
Yajuḥ 36:23, Yajuḥ 6:22, Yajuḥ 20:19, Yajuḥ 35:12, Yajuḥ 38:23

sumitriyaaḥ naḥ aapaḥ oṣhadhayaḥ santu durmitriyaaḥ tasmai santu,
yaḥ asmaan dveṣhṭi yam cha vayam dviṣhmaḥ.

May the (*aapaḥ*) **waters and** (*oṣhadhayaḥ*) **herbs** (*santu*) **be** (*naḥ*) **our** (*sumitriyaaḥ*) **friends and keep us free from sickness! May** (*tasmai*) **they** (*santu*) **be** (*durmitriyaaḥ*) **enemies for the germs etc. that cause sickness! Anyone** (*yaḥ*) **who** (*dveṣhṭi*) **harbors animosity** (*asmaan*) **towards us due to our righteous conduct,** (*cha*) **and** (*yam*) **whoever** (*vayam*) **we may have** (*dviṣhmaḥ*) **animosity for, due to their unrighteous nature, may the entities in both of the categories be destroyed as well!**

In the twenty-fourth mantra the sage offers prayers for long and healthy life.
ṛiṣhiḥ dadhyaṅṅaatharvaṇaḥ, **devataa** sooryaḥ, **vowels** 67, **chhandaḥ** bhurig brahmee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

24. tachchakṣhurdevahitam purastaachchhukramuchcharat,
pashyema sharadaḥ shatañ jeevema sharadaḥ shataṁ
shṛiṇuyaama sharadaḥ shatam pra bravaama sharadaḥ
shatamadeenaaḥ syaama sharadaḥ shatam
bhooyashcha sharadaḥ shataaat. Yajuḥ 36:24, Ṛig 7:4:66:16, Atharva 19:7:67:1-2

तत् । चक्षुः । देवहितमिति देवऽहितम् । पुरस्तात् । शुक्रम् । उत् । चरत् ॥
पश्येम । शरदः । शतम् । जीवेम । शरदः । शतम् । शृणुयाम । शरदः । शतम् । प्र । ब्रवाम । शरदः । शतम् । अदीनाः । स्याम । शरदः । शतम् । भूयः । च । शरदः । शतात् ॥२४॥

(*पुरस्तात्*) **अनादि काल से** (*तत्*) **वह** (*शुक्रम्*) **शुद्ध स्वरूप ईश्वर** (*देव*) **विद्वानों के** (*हितम्*) **हित के लिए** (*उत्*) **भली प्रकार** (*चरत्*) **आचरण करने का ज्ञान** (*चक्षुः*) **दिखा (दे) रहा है।** (*शतम्*) **सौ** (*शरदः*) **वर्ष तक हम उसकी सृष्टि को** (*पश्येम*) **देखते रहें।** (*शतम्*) **सौ** (*शरदः*) **वर्ष तक उसके दिए** (*जीवेम*) **प्राणों को धारण कर उसका ध्यान लगायें।** (*शतम्*) **सौ** (*शरदः*) **वर्ष तक उसकी कीर्ति को** (*शृणुयाम*) **सुनें।** (*शतम्*) **सौ** (*शरदः*) **वर्ष तक उसके दिए ज्ञान की** (*प्र*) **सब ओर** (*ब्रवाम*) **चर्चा करें।** (*शतम्*) **सौ** (*शरदः*) **वर्ष तक** (*अदीनाः*) **आत्म निर्भर** (*स्याम*) **रहें।** (*च*) **और** (*शतात्*) **सौ** (*शरदः*) **वर्ष से** (*भूयः*) **अधिक भी जीवित रहें तो भी ऐसे ही अंगों में क्रिया और आत्म निर्भरता बनी रहे।**

tat chakṣhuḥ deva-hitam purastaat shukram ut charat,
pashyema sharadaḥ shatam jeevema sharadaḥ shatam shṛiṇuyaama sharadaḥ shatam
pra bravaama sharadaḥ shatam adeenaaḥ syaama sharadaḥ shatam bhooyaḥ cha sharadaḥ shataaat.

(*purastaat*) **From the time before the beginning, for the** (*hitam*) **benefit of the** (*deva*) **scholars** (*tat*) **that God who is embodiment of** (*shukram*) **purity, has been** (*chakṣhuḥ*) **showing them the pathways of the** (*ut*) **proper** (*charat*) **conduct. May we continue to** (*pashyema*) **see and admire his creation for** (*shatam*) **one hundred** (*sharadaḥ*) **years! May we continue to** (*jeevema*) **live and meditate on his qualities for** (*shatam*) **one hundred** (*sharadaḥ*) **years! May we continue to** (*shṛiṇuyaama*) **listen to his praise for** (*shatam*) **one hundred** (*sharadaḥ*) **years! May we continue to** (*bravaama*) **spread his knowledge** (*pra*) **everywhere for** (*shatam*) **one hundred** (*sharadaḥ*) **years! May we continue to** (*syaama*) **be** (*adeenaaḥ*) **self dependent for** (*shatam*) **one hundred** (*sharadaḥ*) **years!** (*cha*) **And even if we** (*bhooyaḥ*) **live for** (*shataaat*) **more than one hundred** (*sharadaḥ*) **years may we continue to be self dependent with a fully functional body.**